५. मन का रोगी

– राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'

पहला दृश्य

[मध्यमवर्गीय परिवार का घर। रामेश्वर चिंतामग्न दिखाई देते हैं। सलिल का प्रवेश। वह रामकिशोर के सामने से गुजर जाता है।]

रामकिशोर : सलिल ! **[सलिल नीची गरदन किए खड़ा हो जाता है।]**

राम किशोर : कहाँ गए थे ?

सलिल : जी यहीं, राकेश के पास गया था।

रामकिशोर : तुम्हें हजार बार कह दिया कि इधर-उधर मत घूमा करो। **[माँ का प्रवेश।]**

रामेश्वरी : क्यों रे, तू घर पर नहीं टिकता ! इससे हजार बार कह दिया कि कमरे में बैठकर पढ़ा कर।

रामकिशोर : तुम्हारा लाड़ला पास होता है प्रमोशन से ! यानी कि दो विषयों में फेल। क्यों रे, शर्म नहीं आती तुझे?

सलिल : जी !

रामेश्वरी : कहानी सुनने का तो बड़ा चाव है। रात भर कहानी सुनाते रहो ! खेलने के लिए खुला छोड़ दो और नाटक-सिनेमा देखने के लिए तो पाँच कोस चला जाएगा।

रामकिशोर : जा, अपने कमरे में जाकर चुपचाप पढ़। **[सलिल नीची गरदन किए चला जाता है।]**

रामेश्वरी : आप इतना क्यों धमकाते हैं?

रामकिशोर : तुम्हारे प्यार ने ही तो इसे बिगाड़ दिया है।

रामेश्वरी : आप भूल जाते हैं कि मैं माँ हूँ और फिर भगवान ने हमें एक ही तो संतान दी है।

राम किशोर : यह तुम्हारा लाड़-प्यार इसे बरबाद कर देगा। **[सलिल का प्रवेश, कॉपी-पेंसिल हाथ में हैं।]**

सलिल : पिता जी, यह सवाल कैसे होगा ?

रामकिशोर : अपने मास्टर जी से पूछना। मुझे अब कार्यालय जाने को देर हो रही है।

सलिल : मास्टर जी ने घर पर काम करने को दिया है।

रामकिशोर : तो तुमने क्लास में क्यों नहीं पूछा ? अब मेरा दिमाग मत खा, भाग यहाँ से। **[सलिल जाता है।]**

परिचय

जन्म : १९२८, पिलानी (राज.)

परिचय : आप हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ लेखक हैं। आपकी रचनाएँ प्रेरक, उद्‌बोधक तथा बाल मनोविज्ञान से भी जुड़ी हैं। आपने हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान दिया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'बालोत्सव', 'बाल कवितावली' आदि।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से 'ठिमाऊ' जी ने स्पष्ट किया है कि कम अंक पाने या परीक्षा में असफल रहने पर बच्चों को डाँटना-फटकारना उचित नहीं है। ऐसी अवस्था में अध्यापकों एवं अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों का मनोबल ऊँचा करें। प्रताड़ना की जगह उन्हें प्रेरणा दें। ऐसा करने से ही बच्चे प्रगति कर सकेंगे।

मौलिक सृजन

'मनुष्य को आजीवन विद्‌यार्थी बने रहना चाहिए' पर अपने विचार लिखो।

संभाषणीय

अपने विद्यालय में दसवीं की परीक्षा में सर्वप्रथम आए हुए विद्यार्थी का साक्षात्कार लो।

दूसरा दृश्य

रामकिशोर : (कागज पढ़ते हुए) हिंदी में बीस में से एक, अंग्रेजी में बीस में से जीरो, गणित में बीस में से दो, सामान्य ज्ञान में दस में से दो और सामाजिक विज्ञान में दस में से डेढ़ ।

[रामेश्वरी का प्रवेश ।]

रामेश्वरी : पत्र कहाँ से आया है ? सलिल के मामा का पत्र आए बहुत दिन हो गए । क्यों, सब राजी-खुशी तो हैं न ?

रामकिशोर : यह पत्र सलिल के मामा का नहीं, सलिल के पहले टेस्ट का परिणाम है और साथ ही कक्षाध्यापक का पत्र भी है।

रामेश्वरी : क्यों, सलिल पास हो गया न? स्कूल तो रोज जाता है ।

रामकिशोर : तुम्हारा लाड़ला बुरी तरह फेल हुआ है ।

रामेश्वरी : आप निराश मत होइए । सलिल अभी बच्चा है, समझ जाएगा । हाँ, मास्टर जी ने क्या लिखा है ?

रामकिशोर : सुनना चाहती हो ?

रामेश्वरी : हाँ, पढ़िए ।

[रामकिशोर पत्र पढ़ते हैं ।]

रामकिशोर : प्रिय रामकिशोर जी, सलिल के विषय में मैं अपना अध्ययन लिख रहा हूँ । मैंने देखा है कि सलिल हमेशा चुप रहता है-मानो उसके दिल में किसी बात का डर हो, भय हो या संकोच हो । वह तन से तो स्वस्थ है पर मन से नहीं । उसका मन कुछ कहना चाहता है पर सुनने वाला नहीं मिला, ऐसा मैंने देखा है । आप इसके परिणाम को देखकर निराश न हों । इस प्रकार की गिरावट कभी-कभी बच्चों की उन्नति में आ जाया करती है । हमें इसका हल खोजना है ।

धन्यवाद !
भवदीय,
रामनाथ
कक्षाध्यापक - छठी

रामेश्वरी : सलिल आज-कल कुछ घुटा-घुटा-सा तो रहता है ।

रामकिशोर : हाँ, आज से मैंने मास्टर जी को पढ़ाने के लिए बुलाया है। बड़े अच्छे हैं । **(घड़ी देखते हुए)** वे अभी आते ही होंगे । तुम जरा सलिल को बुलाओ ।

[रामेश्वरी का प्रस्थान । अध्यापक महोदय का प्रवेश ।]

अध्यापक : नमस्कार, रामकिशोर जी !

रामकिशोर : नमस्कार। आइए, चंद्रशेखर जी, मैं अभी-अभी आपकी ही बात कर रहा था।

अध्यापक : कहिए, क्या आज्ञा है?

राम किशोर : आपसे मैं क्या कहूँ, चंद्रशेखर जी ! आप जानते हैं, वही आदमी सुखी है जिसकी संतान लायक है। यह देखिए, सलिल के पहले टेस्ट का परिणाम और साथ में यह कक्षाध्यापक का पत्र भी है। **[अध्यापक दोनों पढ़ते हैं।]**

अध्यापक : मैं समझ गया। **[सलिल की माँ का सलिल के साथ प्रवेश।]**

रामेश्वरी : नमस्कार, मास्टर जी !

सलिल : नमस्ते !

अध्यापक : सलिल तो बड़ा अच्छा लड़का है।

रामकिशोर : पर मास्टर जी, इसके नंबर देखिए न ! किसी विषय में पास नहीं।

रामेश्वरी : बोलो सलिल, चुप क्यों खड़े हो ?

अध्यापक : आप इसकी चिंता मत कीजिए। सलिल की जिम्मेदारी मुझपर छोड़िए।

रामेश्वरी : जी, ठीक है।

अध्यापक : सलिल अब तुम जाओ। **(सलिल का प्रस्थान)** अब मैं आप लोगों से सलिल के विषय में दो-चार बातें पूछना चाहूँगा। आशा है, आप संकोच नहीं करेंगे।

रामकिशोर : अवश्य, अवश्य पूछिए।

अध्यापक : सलिल का पाँचवीं कक्षा में कैसा परिणाम रहा ?

रामेश्वरी : मास्टर जी, पाँचवीं में भी मुश्किल से पास हुआ था।

अध्यापक : तब आप लोगों ने क्या किया ?

रामकिशोर : हमने उसे खूब धमकाया था।

अध्यापक : बस यही बुरी बात थी। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। हम बच्चों के मनोबल को विकसित करके ही उसे एक आदर्श नागरिक बना सकते हैं। क्या आप कभी सलिल के विद्यालय जाते हैं ?

रामेश्वरी : मैं तो आज तक नहीं गई।

रामकिशोर : मैं तो भरती कराने गया था।

अध्यापक : यह आपकी दूसरी भूल है। आपको कम-से-कम सप्ताह में एक बार विद्यालय अवश्य जाना चाहिए और

लेखनीय

मराठी समाचारपत्र के किसी एक परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद करो।

देखना चाहिए कि स्कूल में क्या हो रहा है, अध्यापकों का उद्‌देश्य क्या है और आप उसमें क्या सहायता कर सकते हैं ।

रामेश्वरी : मैं कल ही सलिल के विद्‌यालय जाऊँगी ।

रामकिशोर : आगे से मैं सप्ताह में एक बार सलिल के अध्यापकों से मिला करूँगा ।

अध्यापक : ऐसा करेंगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि सलिल में सुधार होगा । अच्छा, अब आज्ञा दीजिए । नमस्कार ! **[दोनों नमस्ते करते हैं ।]**

तीसरा दृश्य

[सलिल बैठक में बैठा हुआ अपने काम में तल्लीन है। राकेश का प्रवेश]

राकेश : नमस्ते भाई सलिल !

सलिल : नमस्ते, राकेश भाई ! कहिए, क्या हाल है ? भाई, मैं तो गृहकार्य में लगा हुआ हूँ और अभी मास्टर जी आने वाले हैं ।

राकेश : तू दो महीने से कमाल कर रहा है । मास्टर जी ने क्या जादू कर दिया है ? अब तो तू सभी विषयों में होशियार होता जा रहा है । कल नाटक देखने चलेगा न ?

सलिल : जरूर चलूँगा।

राकेश : अब तो तुम्हारे पिता जी भी तुम्हें नहीं रोकते। पहले तो न किसी के साथ खेलने की आज्ञा देते थे और न सैर करने की, न पिकनिक की और न सिनेमा जाने की ।

सलिल : अब तो पिता जी रोज मुझको कहानी सुनाते हैं । मुझे पढ़ाते भी हैं । हमारे विद्‌यालय में भी आते हैं और मैं भी उनको सारी बातें बता देता हूँ ।

[राकेश का प्रस्थान। मास्टर जी का प्रवेश]

सलिल : नमस्ते, मास्टर जी !

अध्यापक : नमस्ते! कहो, क्या कर रहे हो ?

सलिल : आपका दिया हुआ काम ।

अध्यापक : कर लिया ?

सलिल : जी हाँ, सभी विषय के काम पूर्ण कर लिए ।

अध्यापक : शाबाश ! अब तुम बहुत अच्छे लड़के हो गए हो । तुम्हारे माता-पिता और विद्‌यालय के अध्यापक सभी तुम्हारे काम से प्रसन्न हैं ।

पठनीय

अंतरजाल की सहायता से वर्ड आर्ट, ग्राफिक्स, पिक्टोग्राफ संबंधी जानकारी पढ़ो और उनका कहाँ-कहाँ प्रयोग किया जा सकता है, सूची बनाओ ।

सलिल : मास्टर जी !

अध्यापक : हाँ-हाँ, कहो, क्या कहना चाहते हो ?

सलिल : कल राकेश के विद्यालय में नाटक है। मैं देखना चाहता हूँ।

अध्यापक : जरूर जाना। मैं तुम्हारे पिता जी से अनुमति दिलवा दूँगा। **[रामकिशोर का प्रवेश]**

रामकिशोर : नमस्ते, मास्टर जी !

अध्यापक : नमस्कार, रामकिशोर जी !

रामकिशोर : मैं सलिल के विद्यालय से आ रहा हूँ। सभी अध्यापक इसके कार्य से प्रसन्न हैं। यह विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आया है। यह सब आपके परिश्रम का फल है, मास्टर जी।

अध्यापक : नहीं-नहीं, मेरा इसमें क्या है ! यह तो सलिल की लगन का फल है। **[रामेश्वरी का प्रवेश]**

रामेश्वरी : यह तो ठीक है, मास्टर जी; पर रास्ता तो आपने ही हम सबको दिखाया है।

अध्यापक : आप तो मुझको शर्मिंदा कर रही हैं। अच्छा बेटा सलिल, अब तुम जाओ। तुम्हारे नाटकवाली बात मैं तुम्हारे पिता जी से कह दूँगा। **[सलिल का प्रसन्न मुद्रा में प्रस्थान]**

रामकिशोर : क्या बात है ?

अध्यापक : कल राकेश के विद्यालय में नाटक हो रहा है। कृपया आप सलिल को भी नाटक देखने जाने दें।

रामेश्वरी : मैं भी तो जाऊँगी। अपने साथ ले जाऊँगी।

रामकिशोर : चलो, यह और भी ठीक रहेगा।

अध्यापक : रामकिशोर जी, हमें पुरानी परंपराओं को छोड़ना होगा और शिक्षा मनोविज्ञान की बातें अपनानी होंगी। ऐसा करने पर ही देश में हम स्वस्थ नागरिक तैयार कर सकेंगे।

राम किशोर : अब तो मैं उसे छुट्टी में रोज सैर पर भी ले जाता हूँ। मुझसे वह कई प्रकार की बातें पूछता है।

अध्यापक : सही है। हमें बच्चों का विश्वास जीतना चाहिए। विश्वास जीतने के लिए हमें उनका मित्र बनना होगा। हमें उनमें अपने रूखेपन से भय नहीं पैदा करना चाहिए।

रामेश्वरी : यह बात सही है, मास्टर साहब।

रामकिशोर : अब तो सलिल स्कूल का काम अपने आप करता है।

अध्यापक : आपको गृहकार्य के लिए उचित वातावरण बना देना चाहिए। फिर बच्चा स्वयं काम करने लगता है। अच्छा,

अब अनुमति दीजिए । **[दोनों नमस्कार करते हैं ।]**

चौथा दृश्य

[स्थान : वही बैठक का कमरा। शाम का समय है । मास्टर जी सलिल से श्रुतलेखन करवा रहे हैं ।]

रामकिशोर : मास्टर साहब, बधाई हो ! सलिल अब की छमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम आया है । यह देखिए; अंकों की सूची । **[अध्यापक सूची को ध्यान से देखते हैं। रामेश्वरी का प्रवेश]**

रामेश्वरी : क्या बात है? किस बात की खुशी है, मुझे भी मालूम हो ?

राम किशोर : सलिल छमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम आया है । मिठाई खिलाओ ।

रामेश्वरी : अवश्य खिलाऊँगी, एक दिन उन मास्टर साहब को भी घर बुलाइए न !

रामकिशोर : कौन-से मास्टर जी ?

अध्यापक : इनका मतलब रामनाथ जी से है । वही, जिन्होंने सलिल के विषय में पत्र लिखा था ।

रामकिशोर : ओह, सलिल के कक्षाध्यापक। ठीक है, इसी रविवार को एक छोटी-सी पार्टी रखेंगे । रामनाथ जी से निवेदन करूँगा । और हाँ मास्टर जी, आप आना न भूलना ।

रामेश्वरी : हम आपका उपकार नहीं भूल सकते । आपने मन के रोगी सलिल को स्वस्थ किया है ।

अध्यापक : इसमें उपकार की क्या बात है ? यह तो हम अध्यापकों का कर्तव्य है ।

रामकिशोर : क्या पते की बात कही है मास्टर जी ने । पर सभी अध्यापक आप और रामनाथ जी जैसे नहीं बन सकते ।

अध्यापक : बनना पड़ेगा और यदि नहीं बने तो बच्चों का विकास कैसे होगा ?

रामेश्वरी : अब मैं समझ पाई हूँ कि एक माँ को, पुत्र को अच्छा आदमी बनाने के लिए क्या करना चाहिए ।

रामकिशोर : धीरे-धीरे सब ठीक होगा । जब चंद्रशेखर जी और रामनाथ जी जैसे अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आएँगे तो अज्ञान और अशिक्षा का अंधकार नष्ट हो जाएगा ।

अध्यापक : अच्छा, अब चलूँ । नमस्कार । **[दोनों नमस्कार करते हैं ।]**

— o —

श्रवणीय

यू-ट्यूब/रेडियो/सी.डी. पर प्रेरणा गीत सुनो और समारोह में सुनाओ ।

शब्द वाटिका

कोस = दूरी नापने का पुराना परिमाण
मनोबल = आत्मशक्ति, मानसिक बल
संकोच = हिचक, लज्जा
गिरावट = कमी, फिसलन

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

पत्र में मास्टर जी ने सलिल के संबंध में लिखी बातें

(२) कृति करो :

मास्टर जी द्वारा माता-पिता को दिए गए सुझाव

---

(३) लिखो :

१. सलिल के मास्टर जी के नाम
   १. -------
   २. -------

२. पिता जी द्वारा सलिल पर लादे गए बंधन
   १. -------
   २. -------

(४) टिप्पणियाँ लिखो :

१. सलिल के मास्टर जी
२. सलिल के पिता जी
३. सलिल

(५) रिश्ते लिखो :

१. सलिल-रामेश्वरी = ---------
२. रामेश्वरी- रामकिशोर = ---------
३. रामनाथ - सलिल = ---------
४. रामकिशोर-सलिल = ---------

सदैव ध्यान में रखो

जीवन के पथ पर फूलों के साथ काँटे भी होते हैं ।

उपयोजित लेखन

अपने विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई हस्तकला प्रदर्शनी एवं विक्री का प्रचार करने हेतु विज्ञापन बनाओ ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'प्रकृति एवं प्राणी संबंधी हमारे कर्तव्य' विषय पर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

(१) लिंग परिवर्तन करके वाक्य बनाओ :

मामी जी = _____	आदमी = _____
कक्षाध्यापक= _____	पुत्री = _____
भाई = _____	लेखक = _____
बहन = _____	कवि = _____

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____
५. _____
६. _____
७. _____
८. _____

(२) संधि पढ़ो और समझो :

MEP75L

दो ध्वनियों का मेल
संधि

१. उपर्युक्त कहानी पढ़ो ।
२. वार्षिक महोत्सव में अतिथि पधारें ।
३. घृतकुमारी वनौषधि है ।
४. स्वच्छ भारत अभियान ।
५. नाविक नाव खेता है ।

→

उपरि + उक्त (इ + उ = यु)
महा + उत्सव (आ + उ = ओ)
वन + औषधि (अ + औ =औ)
सु + अच्छ (उ + अ = व)
नौ + इक (औ + इ = आवि)

इन उदाहरणों में दो स्वरों के मेल से परिवर्तन हुआ है । ये स्वर संधियाँ हैं ।

१. यह सब विपत्काल को आमंत्रित करना है ।
२. आपने हिंदी वाङ्मय पढ़ा है ?
३. इस अनुच्छेद से जानकारी प्राप्त करो ।
४. एक-दूसरे के प्रति सदिच्छा रखें ।
५. अहंकार से बचना चाहिए ।

→

विपद् + काल (द् + का = त्का)
वाक् + मय (क् + म = ङ्म
अनु + छेद (उ + छ = च्छ)
सत् + इच्छा (त् + इ = दि)
अहम् + कार (म् + का = ङ्)

इन उदाहणों में व्यंजन ध्वनि के पास स्वर अथवा व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है, ये व्यंजन संधि के उदाहरण हैं ।

१. मैं पृथ्वी पर निरंतर उपलब्ध हूँ ।
२. मेरा बहिरंग उसी के अनुरूप हो जाता है ।
३. मुझे भी मनस्ताप दे रहा है ।
४. मैं निस्तेज कांति को सतेज बनाती हूँ ।
५. उसके दुष्परिणाम भी भुगतने पड़ते हैं ।

→

निरंतर = निः + अंतर (ः + अं = रं)
बहिरंग = बहिः + अंग (ः + अं = रं)
मनस्ताप = मनः + ताप (ः + ता = स्ता)
निस्तेज = निः+ तेज (ः + ते = स्ते)
दुष्परिणाम = दुः + परिणाम (ः + प = ष्प)

इन शब्दों में विसर्ग के स्वर या व्यंजन से मिलने पर संधि हुई है । अतः ये विसर्ग संधियाँ हैं ।